IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

शीर्षक : **माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''**

डॉ0 रश्मि सिंह
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
शिक्षण संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
उमेश सिंह
(रिसर्च स्कॉलर), शिक्षाशास्त्र
शिक्षण संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
ईमेल : umeshsinghyadav16@gmail.com
मो0नं0– 8115229652

सारांश :

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्मजात शक्तियों एवं आकांक्षाओं का सामंजस्यपूर्ण स्वाभाविक व्यवहार में सहयोग देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षण काल में विद्यार्थी सक्रिय रहकर सीखने की विधि में निपुणता दिखाकर शिक्षक के साथ अधिगम प्रक्रिया में सहायोग करने लगता है। सक्रियता से बच्चों में सीखने के प्रति जिज्ञासा का भाव जाग्रत होता है व रचनात्मक सोंच बढ़ती है। विद्यार्थी बिना झिझक से सभी कार्यों में लिप्त रहता है और अपनी कल्पनाशीलता को बढ़ाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए जनपद–जालौन के माध्यमिक विद्यालयों में से 80 छात्र/छात्राओं का चयन सरल यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु **डॉ0 के0एन0 शर्मा** द्वारा निर्मित उपकरण (DPA) का प्रयोग सृजनात्मकता हेतु व शैक्षिक उपलब्धि के लिए कक्षा 10 उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्राप्तांकों को लिया गया। सांख्यिकीयकरण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया। परिणामों के सूक्ष्म अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में सृजनात्मकता के गुण अधिक पाये गये एवं छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

कुंजीभूत शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, सृजनात्मकता, सांख्यिकीयकरण, संकलन।

प्रस्तावना :

सामान्यतः शिक्षा का अर्थ स्कूली शिक्षा से लिया जाता है परन्तु वास्तव में इसका अर्थ इससे कुछ भिन्न है और कुछ अधिक है। शिक्षा मनुष्य के विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंकृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

और किसी न किसी रूप में जीवनपर्यन्त चलता रहता है। शिक्षा के स्वरूप एवं कार्यों की व्याख्या मुख्य रूप से दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से की है, शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए उनके दृष्टिकोणों को समझना आवश्यक है।

दार्शनिकों ने शिक्षा के विषय में यह तथ्य उजागर किया है कि यह एक सौद्देश्य प्रक्रिया है, इसके द्वारा मनुष्य के ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि की जाती है और उसके व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। **गाँधी जी** ने शिक्षा को उसके उद्देश्यों एवं कार्यों के रूप में ही परिभाषित किया है। उनके शब्दों में – ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।'' समाजशास्त्रियों ने शिक्षा के विषय में पाँच तथ्य उजागर किए और वे ये कि शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया हे, अविरल प्रक्रिया है द्विध्रुवीय प्रक्रिया है, गतिशील प्रक्रिया है और विकास की प्रक्रिया है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा :

नई शिक्षा नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख डॉ0 के0 कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था, इस समिति ने मई 2019 में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा'' प्रस्तुत किया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति होगी।

- NEP – 2020 के तहत केन्द्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर देश की जीडीपी के 6% हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है।
- नई शिक्षा नीति में वर्तमान में सक्रिय 10+2 के शैक्षिक मॉडल के स्थान पर शैक्षिक पाठ्यक्रम को 5+3+3+4 प्रणाली के आधार पर विभाजित करने की बात कही गई है।
- इस नीति में छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है।
- 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम का दो समूहों में विभाजन 3 वर्ष से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये आँगनबाड़ी/बालवाटिका/प्री–स्कूल के माध्यम से मुफ्त सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण ''प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा'' की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- 6 वर्ष से 8 वर्ष तक के बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा–1 और 2 में शिक्षा प्रदान की जायेगी।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

- छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा 10 और कक्षा 12 की परीक्षाओं में बदलाव किये जायेगें। इसमें भविष्य में सेमेस्टर या बहुविकल्पीय प्रश्न आदि जैसे सुधारों को शामिल किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

वर्तमान में विभिन्न देशों में कई प्रकार के प्रयोग और आविष्कार रहे है। इसमें व्यक्ति के परिश्रम के साथ–साथ उनकी सृजनात्मक सोच भी शामिल है। इसमें यही बताने का प्रयास किया गया है कि शैक्षिक उपलब्धि किस प्रकार से सृजनात्मकता के साथ सहसम्बन्ध रखती है। हर व्यक्ति में कुछ न कुछ सृजनात्मकता होती है। इसे सही समय पर उचित और अथक प्रयास से बढ़ाया भी जा सकता है। जिसके लिए बालक के घर, परिवार के साथ–साथ अध्यापक और विद्यालय संगठन का भी योगदान होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उनकी सृजनात्मकता प्रभावित करती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए उनमें सृजनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए। सृजनात्मकता का विकास तब सम्भव है जब बालक को वैसा वातावरण प्रदान किया जाए, जिसमें उसका सर्वांगीण विकास हो। समय–समय पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि उन्हें और भी नवीन व प्रखर बनाया जा सके। सृजनात्मकता से बालक का सर्वांगीण विकास के साथ–साथ उसके शैक्षिक उपलब्धि का भी विकास होता है। विद्यार्थी ही किसी राष्ट्र के भविष्य होते है। अतः किसी राष्ट व समाज के विकास के लिए विद्यार्थियों को सृजनशील बनाना। हमारा लक्ष्य होना चाहिये। सृजनात्मकता शैक्षिक उपलब्धि से गहन रूप से सम्बन्धित होती है। शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मकता के मध्य परस्पर निर्भरता है। अतः शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों में सर्वांगीण विकास के साथ–साथ सृजनात्मकता पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सृजनात्मकता के विकास के लिए वातावरण व शिक्षक के प्रयास अत्यन्त आवश्यक है। उनके द्वारा प्रदान किये जाने वाले उत्प्रेरण, अभिप्रेरण एवं वातावरण, बालक में सृजनशीलता का विकास करते है।

विभिन्न अध्ययनों जैसे–**रजनी सिंह (2018), दिलीप कुमार झा (2019), नवीन शर्मा (2020)** आदि के अध्ययनों में शैक्षिक उपलब्धि व सृजनात्मकता के मध्य सहसम्बन्ध की बात कही गयी। उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर शोधार्थी द्वारा यह देखा गया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता पर तुलनात्मक अध्ययन कम पाये गये, अतः शोधार्थी ने शोध हेतु इस समस्या को चुना।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

समस्या कथन :

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण :

माध्यमिक स्तर :

भारत में कक्षा 10 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत वर्तमान में रखा गया है। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इसके लिए सेकेण्डरी शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका अर्थ है–दूसरे स्तर की। आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होती है।

सृजनात्मकता :

स्टेन के अनुसार – ''जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।''

शैक्षिक उपलब्धि :

फ्रीमैन के अनुसार – ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह है जिसे किसी विशेष विषय या विषयों के समूह में ज्ञान, बोध या कौशलों के मापन के लिए बनाया गया हो।''

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तावित लघुशोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :

प्रस्तावित लघुशोध की परिकल्पनायें निम्नलिखित हैं :–

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

1. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन :

प्रस्तावित लघु शोध में शोधकर्ता ने अपने अध्ययन की सीमा का निर्धारण निम्नलिखित क्षेत्रों में किया है –

1. अध्ययन के लिए प्रतिदर्श हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद जालौन को लिया गया है।

2. प्रस्तावित शोध अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

3. इसमें 40 छात्र व 40 छात्रओं को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन के चर शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा 10 पास विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की सूची का प्रयोग किया गया एवं सृजनात्मकता हेतु **डॉ0 के0एन0 शर्मा** द्वार मानकीकृत उपकरण (DPA) का प्रयोग किया गया।

अनुसंधान प्रविधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु जनपद–जालौन के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं क्रान्तिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गये।

सम्बन्धित अध्ययनों की समीक्षा :

प्रिय, रंजन (2018) ने बी0एड0 महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन में बी0एड0 महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव के सम्बन्ध में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

1. उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले बी0एड0 महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

2. औसत और निम्न नैतिक मूल्य वाले बी0एड0 महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।?

शर्मा, डा0 विष्णु एवं व्यास, शुभा (2018) ने विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनकी चिंतन शैली व सृजनात्मकता के संदर्भ में अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये–

सकारात्मक व नकारात्मक वैज्ञानिक अभिवृत्ति रखने वाले विद्यार्थियों की चिन्तन शैली व उसके आयामों के दौरान मस्तिष्क की कार्यशैली में समानताएँ है।

क्षेत्री, डॉ0 भावना (2018) ने किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर दुश्चिन्ता व समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया व निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. किशोर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसका कारण यह है कि किशोर छात्राएं छात्रों में उपलब्धि स्तर के मामलों में अधिक संवेदनशील हो गई हैं। वे किशोरावस्था से ही अपनी शिक्षा पर अधिक ध्यान देने लगी है। व्यवहारिक रूप से बोर्ड की परीक्षा परिणामों में भी यही सिद्ध हुआ है।

2. किशोर छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि व दुश्चिन्ता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि कई बार दुश्चिन्ता होने पर किशोर छात्र व छात्रायें अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिये प्रेरित होते हैं।

सिंह, रजनी (2018) ने पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय के वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। विद्यालय का वातावरण शैक्षिक उपलब्धि को किसी अन्य चर के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक, आर्थिक स्तर का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

कुमार झा, दिलीप (2019) ने परम्परागत और आधुनिक छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन में सृजनात्मकता तथा आकांक्षा स्तर में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं होते है। अर्थात् दोनों के सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. परम्परागत छात्र–छात्राओं के अपेक्षाकृत आधुनिक छात्र–छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है।

शर्मा, नवीन (2020) ने शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये–

1. शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक चाहे वह शिक्षा महाविद्यालय के हों चाहे महिला महाविद्यालय के हों उनकी शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शैक्षिक दक्षता का विद्यार्थियों की उपलब्धि से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

द्विवेदी, सुमित (2022) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर योग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. निजी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर योग का प्रभाव राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर योग का प्रभाव की तुलना में अधिक है।
2. राजकीय तथा निजी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्य फलांको में सार्थक अन्तर पाया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना 01–

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

तालिका संख्या - 01

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	$S_{ED}/\sigma D$	D	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	सार्थकता स्तर	t	शून्य परिकल्पना
छात्र	40	63.825	13.34	14.576	207	0.185	0.05	1.66	अस्वीकृत
छात्राएं	40	66.525	26.853						अस्वीकृत

0.05 = 1.66 जहाँ मुक्तांश (df) = 78

उपरोक्त तालिका संख्या 01 के आधार पर छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के प्राप्तांक के आधार पर छात्र–छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 63.825 तथा 66.525 तथा मानक विचलन 13.34 तथा 26.853 है। इन दोनों समूह के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात 0.185 प्राप्त हुआ है। यह मान मुक्तांश 78 के 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का सारणीमान 1.66 है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत हुई है एवं छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्राओं का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया। परिणामतः छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में सृजनात्मकता अधिक है।

आरेख संख्या–01

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का दण्डारेखीय अनुपात –

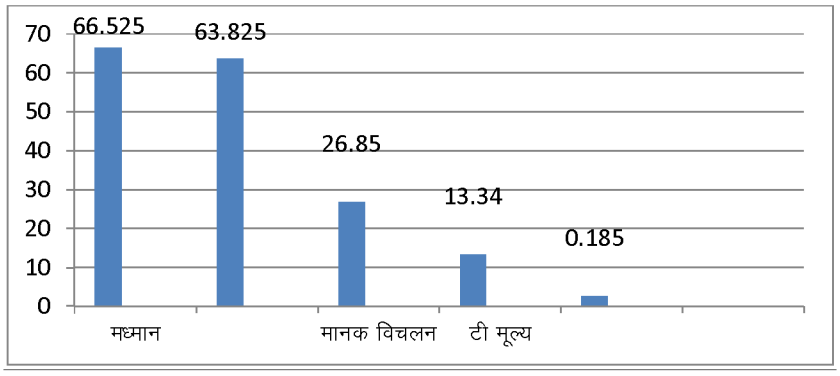

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

परिकल्पना 02 –

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 02

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	$S_{ED}/\sigma D$	D	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	सार्थकता स्तर	t	शून्य परिकल्पना
छात्र	40	59.175	18.0774	12.6001	5.8	0.46	0.05	1.66	अस्वीकृत
छात्राएं	40	53.375	6.6884						अस्वीकृत

0.05 = 1.66 जहाँ मुक्तांश (df) = 78

उपरोक्त तालिका संख्या 02 के आधार पर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक के आधार पर छात्र–छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 59.157 तथा 53.375 तथा मानक विचलन 18.0774 व 6.6884 है। इन दोनों समूह के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात 0.46 प्राप्त हुआ है। यह मान मुक्तांश 78 के 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का सारणीमान 1.66 है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत हुई है एवं छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्राओं का मध्यमान छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। परिणामतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

आरेख संख्या–02

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का दण्डारेखीय अनुपात

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

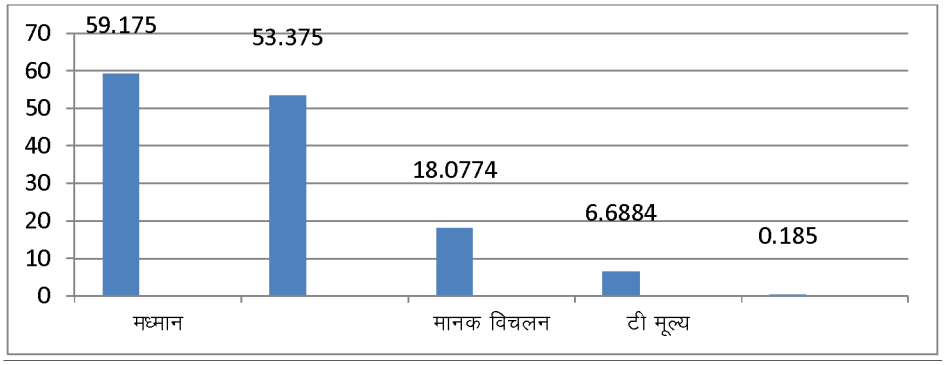

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष :

इस लघु शोध हेतु शोधकर्ता ने जनपद जालौन के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 80 विद्यार्थियों (40 छात्र एवं 40 छात्राओं) की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मापन किया। हालांकि इस लघु शोध से प्राप्त निष्कर्ष सर्वमान्य नहीं कहे जा सकते है क्योंकि प्रतिदर्श का क्षेत्र सीमित था। परन्तु फिर भी प्राप्त परिणाम महत्वपूर्ण है। शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिणाम सांख्यिकी विश्लेषण की समीक्षा के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

उद्देश्य संख्या 01 – माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना – 1 : माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है। शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत हुई है एवं छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्राओं का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया। अतः छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में सृजनात्मकता अधिक है। इससे स्पष्ट है कि छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा सृजन के गुण अधिक पाये जाते है छात्राएं अध्ययन के साथ–साथ अन्य कार्यों में तर्क न कर संगति में रह कर कार्यों को अलग रूप में करने का प्रयास करती है। छात्र अपनी जिज्ञासा तर्क से सम्पन्न करता है और छात्राएं उसी जिज्ञासा को दूसरे पूरक के रूप में रखकर कार्य करती है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

उद्देश्य संख्या 02 – माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना 02 – माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत हुई है एवं छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। छात्रों का मध्यमान छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। परिणामतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

इससे स्पष्ट है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर अधिक है। इसका कारण विद्यालय का समृद्ध वातावरण छात्रों की नियमित उपस्थिति का प्रभाव, पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि की स्थिति बेहतर होने से उसका प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ :

व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्णरूपेण विकास शिक्षा के द्वारा होता है। व्यक्ति उचित शिक्षा पाकर अपने आन्तरिक गुणों का विकास एवं प्रकटीकरण करता है, जो उसके व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके सृजनशीलता पर भी निर्भर करती है। सृजनात्मकता के अभाव में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर प्रभावित होता है। ऐसे में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

विद्यार्थियों के प्राथमिक स्तर पर ही सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जाए तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर के विकास में सृजनात्मकता के तत्व को प्राथमिकता दी जाये, जिससे विद्यार्थियों में एक सृजनशील व्यक्तित्व का विकास संभव हो सकेगा। विद्यार्थियों में सृजनशील व्यक्तित्व विकसित करने के लिए पहले शिक्षकों का सृजनशील होना आवश्यक है। शिक्षक में जब सृजनशीलता का गुण पाया जायेगा, तभी विद्यार्थियों में वह इस गुण को विकसित कर सकेगा, इसके लिए विद्यार्थियों में मौलिकता व विविधता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना चाहिए शैक्षिक उपलब्धि के विकास में शिक्षा तथा वातावरण के प्रभाव की भी अवहेलना नहीं की जा सकती। अच्छी शिक्षा, अच्छी देखभाल सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अवसरों की व्यवस्था, सृजनात्मकता को अंकुरित व पोषित करती है। इसमें माता–पिता, समाज, विद्यालय तथा अध्यापक अपनी भूमिका निभा सकते है। वे बच्चो के पालन–पोषण तथा उनकी सृजनात्मक योग्यताओं व शैक्षिक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

उपलब्धि के विकास में सहायता दे सकते है। शिक्षको को विद्यार्थियों के साथ सहयोगी स्नेहपूर्ण तथा मित्रवत व्यवहार करना चाहिए तथा समय–समय पर दिशा निर्देश देना चाहिए, जिससे विद्यार्थी उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सके व उनमें सृजनात्मकता का विकास हो सके। इसके लिए विद्यार्थियों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अधिक से अधिक भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता :

प्रस्तुत शोध–पत्र विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, परामर्शवेत्ताओं, शैक्षिक अनुदेशकों व शैक्षिक नीति निर्धारकों के लिए उपयोगी एवं विशेष रूप से आवश्यक होगा। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से अध्ययनकर्ता यह समझ सकेगें कि शैक्षिक उपलब्धि को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु सृजनात्मकता की क्या भूमिका हो सकती है।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव :

1. प्रस्तुत शोध केवल जनपद जालौन पर किया गया है। अतः इस प्रकार के शोध कार्य प्रदेश स्तर पर किये जा सकते है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य छात्रों एवं छात्राओं पर किया गया है। आगे इस तरह के शोधकार्य अध्यापकों पर किये जा सकते है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य उच्च माध्यमिक स्तर पर किया गया है। अतः प्राथमिक स्तर व निम्न माध्यमिक स्तर तथा उच्च शिक्षा में भी किया जाना शेष है।
4. प्रस्तुत शोधकार्य 80 न्यादर्श पर किया गया है। आगे यह शोधकार्य बड़े न्यादर्श पर किये जाने से अधिक विश्वसनीय और वैध निष्कर्ष प्राप्त होगे।
5. प्रस्तुत शोधकार्य सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं पर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मानव, प्रो0 आर0एन0 (2017); शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो, पृ0सं0, 9–10.

लाल, रमन बिहारी (2017); शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय परिदृश्य, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स पृ0सं0 1–2.

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, Jan 2023

भटनागर, डॉ0 आर0पी0 व डॉ0 मीनाक्षी (2007); शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, लाल बुक डिपो, पृ0सं0, 68.

पाण्डेय, बी0बी0 (1995); शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण, गोरखपुर, वसुन्धरा किशन, पृ0सं0, 64.

शर्मा, नामित (2018); शिक्षा का वैचारिक ढाँचा, आगरा, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन्स, पृ0सं0, 4–5.

अग्रवाल, जे0सी0 (2005); शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0सं0, 335.

गुप्ता, एस0पी0 (2014); उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृ0सं0 602–603.

शर्मा, आर0ए0 (1995); शिक्षा अनुसंधान आगरा, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृ0सं0, 70.

शर्मा, आर0ए0 (2003); शिक्षा अनुसंधान मेरठ, आर0लाल बुक डिपो, पृ0सं0, 18–19.

श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 एवं डॉ0 वी0एन0 (2011); अनुसंधान विधियाँ आगरा, साहित्य प्रकाशन, पृ0सं0, 451.

शर्मा, आर0ए0 (2009); शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो, पृ0सं0, 380–381.

राय, पारसनाथ (2008); अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मीनाराण अग्रवाल

कपिल, डॉ0 एच0के0 (2006); अनुसंधान विधिया, आगरा, भार्गव पुस्तक प्रकाशन

गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 (2014); अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृ0सं0, 54–57.

अग्रवाल जे0सी0 (2005); शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

शर्मा, आर0ए0 (2011); शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो।

गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका गुप्ता (2008); व्यावहारिक विज्ञानों में सांख्यिकी विधियाँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

www.successcds.net
http://shodgangotri.co.in
http://www.researchgate.net
http://www.abjankari.in